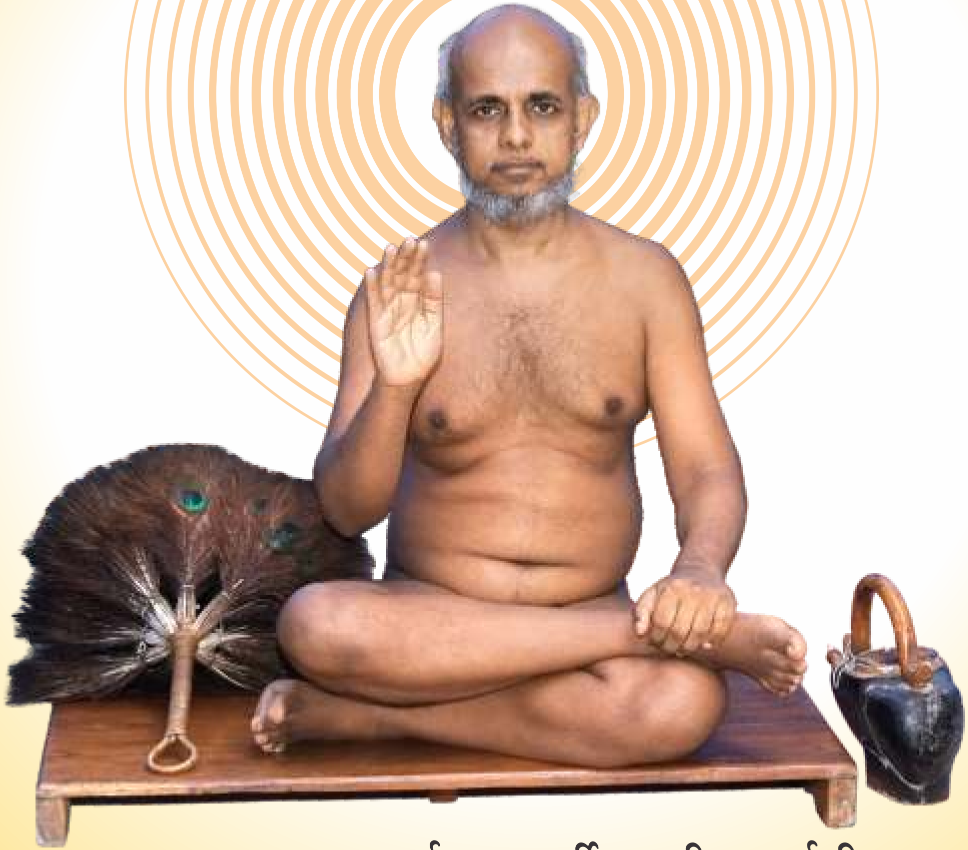

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान (लघु)

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

कृति : **विशद तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान (लघु)**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी, ऐलक श्री विदक्षसागर जी
क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, क्षु. श्री वात्सल्य भारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660998425

संयोजन : ब्र. सपना दीदी 9829127533, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : द्वितिय 2018 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 25/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : 1. **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

2. **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली,
नियर लाल बत्ती चौक
गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971

3. **सुरेश सेठी**
पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,
दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017

-: अर्थ सौजन्य :-

श्रीमती माधुरी जैन धर्मपत्नी श्री एम.पी. जैन

1188/17, फरीदाबाद (हरि.)

फोनः 01294075432

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

rÙokFkZlw=ozrfof/k

तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ जिसका दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है, इसमें दश अध्याय हैं। दिगम्बर जैन परम्परा में संस्कृत भाषा में पहला सूत्रग्रंथ है। एक-एक अध्याय को आश्रित करके इसके 10 व्रत किये जाते हैं। व्रत में भगवान का अभिषेक करके। सरस्वती प्रतिमा या श्रुतस्कंध यंत्र का भी अभिषेक करके तत्त्वार्थ सूत्र की पूजा करें।

समुच्चय मंत्र-**ॐ ह्रीं दशाध्यायसहिततत्त्वार्थसूत्रमहाशास्त्रेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र-

1. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रप्रथमाध्यायस्य सम्यग्दर्शनादित्रयस्त्रिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रद्वितीयाध्यायस्य औपशमिकादित्रिपंचाशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रतृतीयाध्यायस्य रत्नशर्करादिएकोनचत्वारिंशत्- सूत्रेभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रचतुर्थाध्यायस्य देवाश्चतुर्णिकाया आदि द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रपंचमाध्यायस्य अजीवकायादि द्विचत्वारिंशत्- सूत्रेभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रषष्ठाध्यायस्य कायवाङ्मनः कर्मयोगइत्यादि सप्तविंशति सूत्रेभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रसप्तमाध्यायस्य हिंसानृतस्तेयादिएकोन- चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्राष्टमाध्यायस्य मिथ्यादर्शनाविरत्यादि-षड्विंशतिसूत्रेभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रनवमाध्यायस्य आस्रवनिरोधःसंवर आदिसप्त चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो नमः।**
10. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रदशमाध्यायस्य मोहक्षयाज्ज्ञानादि नवसूत्रेभ्यो नमः।**

इस व्रत को पूर्ण कर उद्यापन में **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागर जी** द्वारा रचित यह **'तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान'** करके तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ या विधान छपाकर ज्ञानदान में चतुर्विध संघ को प्रदान करें। दश-दश उपकरणादि मंदिर जी में भेंट देवें। यथाशक्ति व्रत पूर्ण करें। दशलक्षण पर्व में यह विधान अवश्य करें यह विधान आपके जीवन में कर्म निर्जरा का कारण बने। इसी भावना के साथ पुनश्च गुरुदेव श्री विशदसागर जी महाराज के चरणों में नमोस्तु-3

-मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

rÙokFkZ lw= dh dFkk

तत्त्वार्थ सूत्र की रचना के विषय में मनोरंजक कथा है। कहा गया है कि ऊर्जयन्त गिरि के निकट गिरनार नाम के पत्तन में आसन्न भव्य 'सिद्धय्य' नाम का एक मुमुक्षु श्रावक था। उसने 'दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः' सूत्र बनाया और कार्यवश बाहर चला गया और सूत्र एक पटिये पर लिख छोड़ा। इस श्रावक के घर मुनि आये। श्रावक की माता व गृहणी ने पड़गाहन कर आहार दिया। मुनि जब वन को जाने लगे तो उनकी दृष्टि पटिये पर लिखे हुए सूत्र पर पड़ी। कुछ सोचकर उसके आदि में उसने 'सम्यक्' पद और जोड़ दिया। इसलिये कि दर्शनज्ञान चारित्र मिथ्या भी होते हैं, वे मोक्ष के मार्ग नहीं संसार के मार्ग होते हैं, इसलिये संदिग्ध पद को सुधार देना उचित है-ऐसा सोचकर सूत्र के पहिले 'सम्यक्' लिख दिया और मुनि तपोवन में चले गये। श्रावक जब घर आया और उसने उस सूत्र में 'सम्यक्' शब्द जुड़ा देखा तब प्रसन्न होकर अपनी माता से पूछा कि किन महानुभाव ने यह शब्द जोड़ा है? माता ने उत्तर दिया कि एक निर्ग्रन्थाचार्य ने यह शब्द जोड़ा है और वह शीघ्रता से खोज करता हुआ मुनिराज के पास पहुँच जाता है और चरणों में नम्रीभूत हो महाराज से ग्रंथ का निर्माण करने की प्रार्थना करता हुआ पूछने लगा कि आत्मा का हित क्या है? मुनिराज ने कहा 'मोक्ष' है। इस पर मोक्ष का स्वरूप और उसकी प्राप्ति का उपाय पूछा गया। जिसके उत्तर रूप में ही इस ग्रंथ का अवतार हुआ है इसी से इस ग्रंथ का अपर नाम 'मोक्षशास्त्र' है। इस प्रकार 'सिद्धय्य' नामक उपासक के लिये आचार्य उमास्वामी महाराज की यह शास्त्र रचना महान वात्सल्यभाव की द्योतक है।

इस ग्रंथ में आचार्य उमास्वामी ने पथ भ्रान्त संसारी पुरुषों को मोक्ष का सच्चा मार्ग बतलाया है-'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः' अर्थात् सम्यग्दर्शन (आत्मदर्शन) सम्यग्ज्ञान (आत्मज्ञान) सम्यग्चारित्र (आत्मरमण) इन तीनों की एकता ही मोक्ष मार्ग है। इन्हीं तीनों का विशद विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है। पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी॥4॥
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है॥
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥

दोहा- नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

॥श्री वीतरागाय नमः॥

श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान पूजा

स्थापना

मोक्ष मार्ग के नेता हैं जो, कर्म शिखर के हैं भेदक।
सर्व तत्त्व के ज्ञाता पावन, दिव्य देशना उपदेशक॥
उन समान गुण पाने को हम, करते चरणों में अर्चन।
निज उर के सिंहासन पर जिन, मुनि का करते आह्वानन्॥
दोहा- जैनागम का शास्त्र है, मोक्ष शास्त्र है नाम।
पाने सम्यक् ज्ञान शुभ, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापननम्।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतियादाम)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ!, दो मोक्ष मार्ग में हमे साथ॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥1॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय दिव्य जलं निर्वपामीति स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
बनकर आये प्रभु ज्ञानवान, जो भवाताप की किए हान॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥2॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय भवाताप विनाशनाय दिव्य चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूजा करने खड़े द्वार, भव सिन्धू से अब करो पार॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥3॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अक्षय पद प्राप्ताय दिव्य अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम बनें नाथ अब शीलवान, शुभ प्राप्त करें निज गुण प्रधान॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥4॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय कामबाण विध्वंसनाय दिव्य पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, प्रभु मोक्ष महल में होय वास॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥5॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय क्षुधारोग विनाशनाय दिव्य नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
प्रगटाएँ हम केवल्य ज्ञान, जो तीन लोक में है प्रधान॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥6॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दिव्य दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
अब अष्ट कर्म का हो विनाश, सम्यक्त्व ज्ञान का हो प्रकाश॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥7॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अष्ट कर्म दहनाय दिव्य धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
अब मुक्ती पथ की मिले राह, मिट जाए मन की चाह दाह॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥8॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय मोक्षफल प्राप्ताय दिव्य फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब चढ़ा रहे ये श्रेष्ठ अर्घ्य, पद भी हम पाएँ शुभ अनर्घ्य।
अब शाश्वत पद में हो निवास, हो जाए नाथ अब पूर्ण आस॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥9॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अध्याय

दोहा- मोक्ष शास्त्र जग में रहा, महिमामयी महान।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, करने को गुणगान॥

॥इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा- सद्दर्शन ज्ञानाचरण, मोक्ष मार्ग पहिचान।
तत्त्व अर्थ श्रद्धान शुभ, सम्यक् दर्श महान॥1॥

ॐ ह्रीं मोक्ष मार्ग सम्यक् दर्शन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन जीव को, होय स्वपर उपदेश।
हो निसर्ग स्वभाव से, अधिगम पर उपदेश॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीवाजीव आश्रव तथा, बन्ध अरु संवर जान।
कर्म निर्जरा मोक्ष यह, सप्त तत्त्व पहिचान॥3॥

ॐ ह्रीं जीवादि तत्त्व प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाम स्थापना द्रव्य अरु, भाव न्यास ये चार।
इनके द्वारा जगत में, चले लोक व्यवहार॥4॥

ॐ ह्रीं नामादि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान प्रमाण है, एक देश नय जान।
वस्तु तत्त्व का लोक में, होता जिनसे ज्ञान॥5॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्देश स्वामित्व हेतु अरु, अधिकरण स्थिति विधान।
जिनके द्वारा लोक में, हो तत्त्वों का ज्ञान॥6

ॐ ह्रीं निर्देशादि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत् संख्या शुभ क्षेत्र अरु, कालान्तर स्पर्श।
अल्पबहुत्व से जीव को, हो भावों का दर्श॥7॥

ॐ ह्रीं सत्संख्यादि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति श्रुत दोय परोक्ष हैं, तीन ज्ञान प्रत्यक्ष।
अवधि मनः पर्यय तथा, केवल है प्रत्यक्ष॥8॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्ष परोक्ष ज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मति स्मृति संज्ञा तथा, चिंता अरु अभिनिबोध।
अर्थान्तर मति ज्ञान के, जिनसे हो प्रतिबोध॥9

ॐ ह्रीं मतिज्ञान पर्यायवाची नाम प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय मन से सहित, होता है मतिज्ञान।
अवग्रह ईहा अवाय अरु, धारणा भेद महान॥10॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञान भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बहु बहुविध ध्रुव अनिःश्रित, अक्षिप्र और अनुक्त।
छह इनके विपरीत हैं, ज्ञान के कारण उक्त॥11॥

ॐ ह्रीं बहु-आदि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बहु आदिक के भेद सब, अर्थ द्रव्य में होय।
व्यंजन का रस आदि में, मात्र अवग्रह होय॥12॥

ॐ ह्रीं अर्थव्यंजन भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अव्यक्त व्यंजन का सदा, मात्र अवग्रह होय।
ना हो मन अरु नेत्र से, बहु आदिक में होय॥13॥

ॐ ह्रीं व्यंजनावग्रह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान के भेद दो, बारह और अनेक।
मति ज्ञान द्वारा जगे, जीव का स्वयं विवेक॥14॥

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव प्रत्यय अवधिज्ञान तो, देव नारकी पाय।
छह प्रकार का क्षयोपशम, नर पशु ही प्रगटाए॥15॥

ॐ ह्रीं क्षयोपशम तथा अवधिज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनः पर्यय के भेद दो, ऋजु विपुलमति ज्ञान।
हो विशुद्धि प्रतिपात ना, विपुल मती में मान॥16॥

ॐ ह्रीं मनःपर्यय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षेत्र विशुद्धि स्वामी विषय, यह विशेषता जान।
अवधि मनःपर्यय सदा, दोनों भिन्न महान॥17॥

ॐ ह्रीं अवधिमनःपर्यय अन्तर प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति श्रुत दोनों द्रव्य की, जानें कुछ पर्याय।
पर्याय रूपी जानता, अवधि ज्ञान कहलाय॥18॥

ॐ ह्रीं श्रुतावधि विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सर्वावधि का अनन्तवाँ, जाने मनःपर्याय।
सर्वद्रव्य पर्याय को, केवल ज्ञान बताय॥19॥

ॐ ह्रीं अवधिमनः-पर्यय केवल ज्ञान विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होवे क्रमशः चार तक, या हो केवल ज्ञान।
तीन ज्ञान विपरीत हैं, प्रथम कहे पहिचान॥20॥

ॐ ह्रीं मत्यादिज्ञान संभव तथा कुज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदसद के सद ज्ञान बिन, जो इच्छा में आय।
उन्मत जैसी चेष्टा, मिथ्या ज्ञान कहाय॥21॥

ॐ ह्रीं कुज्ञान स्वभाव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नैगम संग्रह व्यवहार अरु, ऋजु सूत्र समभिरूढ़।
शब्द अरु एवंभूत नय, जान सकें ना मूढ़॥22॥

ॐ ह्रीं नैगमादिनय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

सम्यक् दर्शन ज्ञान का, किया गया व्याख्यान।
यहाँ प्रथम अध्याय में, उमास्वामि ने मान॥
ज्ञान सुधारस का 'विशद', करने को रसपान।
पूजा करते भाव से, करने सद् श्रद्धान॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित प्रथम-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अध्याय

(चौपाई)

उपशम क्षायिक मिश्र प्रधान, जीवों के हैं भाव महान।
औदायिक पारिणामिक जान, भाव जीव के हैं यह मान॥1॥

ॐ ह्रीं औपशमिक आदि भाव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय नव अष्टादश इकबीस, तीन भेद बतलाए ऋशीष।
उपशम सम्यक् चारित जान, उपशम के दो भेद महान॥2॥

ॐ ह्रीं औपशमिक भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षायिक दर्शन चारित ज्ञान, हान लाभ उपभोग प्रधान।
भोग वीर्य युत नौ यह भेद, प्राणी का हरते हैं खेद॥3॥

ॐ ह्रीं क्षायिक भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लब्धि ज्ञान दर्शन अज्ञान, पंच चार त्रय त्रय पहिचान।
संयमासंयम सम्यक् जान, चारित मिश्र के भेद महान॥4॥

ॐ ह्रीं मिश्र भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गति कषाय लिंग त्रय जान, असंयमासिद्ध दर्श अज्ञान।
चार चार त्रय इक चऊ बार, लेश्या के छह कहे प्रकार॥5॥

ॐ ह्रीं औदायिक भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भव्याभव्य जीवत्त्व प्रधान, पारिणामिक त्रय भेद महान।
लक्षण जीव का है उपयोग, द्वय वसु चार भेद के योग॥6॥

ॐ ह्रीं पारिमाणिक जीवलक्षण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद जीव के दो कहलाए संसारी अरु मुक्त बताए।
संसारी त्रस थावर जान, संज्ञी असंज्ञी भेद प्रधान॥7॥

ॐ ह्रीं जीव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू जल अग्नि वायु शुभकार, वनस्पति यह पञ्च प्रकार।
द्वय त्रय चउ पंचेन्द्रियवान, त्रस कहलाए जीव प्रधान॥8॥

ॐ ह्रीं त्रस स्थावर जीव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्रियाँ पाँच रहीं दो रूप, द्रव्य भाव दोनों स्वरूप।
द्रव्योपकरण निवृत्तीवान, लब्ध्योपयोग भावेन्द्रिय जान॥9॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्पर्शन रसना अरु घ्राण, चक्षू कर्ण ये इन्द्रियाँ मान।
स्पर्श रस गंध वर्ण विशेष, विषय कहे इन्द्रिय के शेष॥10॥

ॐ ह्रीं इन्द्रिय विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन का विषय रहा श्रुत ज्ञान, एकेन्द्रिय सब जीव समान।
भू जल अग्नि वायु पहिचान, वनस्पति एकेन्द्रिवान॥11॥

ॐ ह्रीं श्रुतमनिन्द्रिय विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लट पिपील अलि नर सुर जान, इक इक इन्द्री बढ़ती मान।
संज्ञी हो मन से संयुक्त, शेष सभी हों मन से युक्त॥12॥

ॐ ह्रीं संज्ञी असंज्ञी भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म योग निग्रह गति पाय, अन्य गती में मर के जाय।
गमन होय श्रेणी अनुसार, जीव अरु पुद्गल का हर बार॥13॥

ॐ ह्रीं विग्रहगति अनुश्रेणी गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त जीव ऋजु गति से जाय, एक समय की गति कहलाय।
संसारी विग्रह गतिवान, चार समय के पहले मान॥14॥

ॐ ह्रीं मुक्त जीव संसारी जीव गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समय एक द्वय तीन प्रकार, रहे जीव ये निःआहार।
सम्मूर्छन अरु गर्भोपपाद, भेद जन्म के रखना याद॥15॥

ॐ ह्रीं अनाहारक समय एवं जन्म भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित शीत संवृत्त विपरीत, मिश्र योनि नव भेद प्रतीत।
पोत जरायू अण्डज वान, गर्भ जन्म त्रय भेद प्रमाण॥16॥

ॐ ह्रीं जन्म योनि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव नारकी का उपपाद, जन्म होय यह रखना याद।
शेष सम्मूर्छन्न पावें देह, जानो भाई निःसन्देह॥17॥

ॐ ह्रीं जन्म शरीर भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औदारिक वैक्रिय आहार, तैजस कार्माण पञ्च प्रकार।
आगे-आगे सूक्ष्म शरीर, आहारक तन जानो धीर॥18॥

ॐ ह्रीं शरीर भेद सूक्ष्मता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनन्त गुणे तेजस कार्माण, अप्रतिघाती रहे महान।
है सम्बन्ध अनादी काल, सर्व शरीरों से हर हाल॥19॥

ॐ ह्रीं आहारक तैजस कार्माण शरीर सूक्ष्मता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शरीर द्वय त्रय या चार, एक साथ में भली प्रकार।
है उपभोग रहित कार्माण, और गर्भ सम्मूर्छन जान॥20॥

ॐ ह्रीं तैजस कार्माण अनादि सम्बद्ध संसारी जीव शरीर संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औपपादिक वैक्रिय तन होय, लब्धी प्रत्यय तेजस सोय।
शुभ विशुद्ध आहारक देह, प्रमत्त संयत पाएँ तन ऐह॥21॥

ॐ ह्रीं अंतिम तन उपभोग रहितत्व गर्भ सम्मूर्छन लब्धि जन्य शरीर प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारक सम्मूर्छन जो होय, जीव नपुंशक मानो सोय।
देव में नहीं नपुंशक भेद, शेष सभी त्रय पाते वेद॥22॥

ॐ ह्रीं नपुंसक जीव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औपपादिक चरमोत्तम देह, असंख्यात वर्षायुष सोय।
अनपवर्त आयुष यह जीव, पुण्यवान यह रहे अतीव॥23॥

ॐ ह्रीं असंख्यात आयु अनपवर्त्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

भाव जीव का लक्षण भेद, इन्द्रिय आदिक जीव प्रभेद।
कार्माणादिक देह सुजान, वेदादिक का पाया ज्ञान॥
श्री जिनेन्द्र कीन्हे व्याख्यान, गणधर गूंथे सम्यक्ज्ञान।
पाया आगम का आधार, पूज रहे हम बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद नयगर्भित द्वितीय अध्यायायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय अध्याय

(चामर छन्द)

रत्न शर्करा बालुका पंक जानिए,
धूम तम महातम भू पहिचानिए।
नाम अनुसार कांति शुभ गाइये,
अधो अधो सप्त भूमियाँ यह पाइये॥1॥

ॐ ह्रीं नरक भूमि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीस पच्चीस पन्द्रह दश गाए हैं,
तीन एक लाख पाँच कम बतलाए हैं।
साँतवे नरक में पाँच बिल जानिए,
लाख चौरासी सर्व पहिचानिए॥2॥

ॐ ह्रीं नरक भूमि संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारकी नित्य अशुभतर देहवान हैं,
लेश्या वेदना विक्रिया परिणाम हैं।
दुःख नारकी परस्पर देत घोर हैं,
तीसरे नरक तक ही चले जोर है॥3॥

ॐ ह्रीं नारकी दुःख प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठायु एक तीन सात दश गाई है,
सत्रह बाईस तैंतिस सागर बताई है।
नरकों में नारकी दुख पाते जानिए,
दीर्घ काल पावें दुख भाई ये मानिए॥4॥

ॐ ह्रीं नरकायु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप लवणोदादिक शुभ गाए हैं,
नाम श्रेष्ठ जिनके भाई बतलाए हैं।
जम्बूद्वीप से दूने-दूने जो गाए हैं,
पूर्व पूर्व वलयाकृत घेरे जो पाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं द्वीप समुद्र प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत हेमवत क्षेत्र हरी विदेह जानिए,
रम्यक हैरण्यवत ऐरावत मानिए।

हिमवन महाहिमवन अरु निषधांचल सोहते,
नील रुक्मि शिखरिन् पर्वत मन मोहते॥6॥

ॐ ह्रीं भरतादि क्षेत्र हिमवन् आदि पर्वत प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीत श्वेत लाल नील श्वेत पीत गाए हैं,
पार्श्व भाग मणियों से खचित बतलाए हैं।
पद्म महापद्म द्रह तिगिन्छ पहिचानिए,
केसरी महापुण्डरीक पुण्डरीक मानिए॥7॥

ॐ ह्रीं पर्वत वर्ण, सरोवर कृम प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(सखी छन्द)

इक सहस योजन लम्बाई, जिसकी आधी चौड़ाई।
शुभ प्रथम सरोवर जानो, गहरा दश योजन मानो॥8॥

ॐ ह्रीं पद्मसरोवर विस्तार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक योजन कमल बताया, जो पद्म द्रह में गाया।
यह दूने-दूने जानो, द्रह और कमल पहिचानो॥9॥

ॐ ह्रीं कमल सरोवर क्रम प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धी, लक्ष्मी है धारी ऋद्धी।
सामानिक परिषद गाए, सुर पल्य की आयू पाए॥10॥

ॐ ह्रीं ह्रीआदि देवि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंगा रोहित हरि सीता, नारी स्वर्ण कुला रक्ता।
यह पूरब दिशा बहाएँ, प्रति क्षेत्र में दो-दो आएँ॥11॥

ॐ ह्रीं पूर्वदिक सरिता प्रवाह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पश्चिम में सिंधु रोहितास्या, हरिकान्त सीतोद नरकान्ता।
रूप्यकूल रक्तोदा जानो, निर्मल जल बहता मानो॥12॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिक् सरिता प्रवाह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं चौदह सहस सरिताएँ, मिल गंगा सिन्धू में आएँ।
यह दुगुनी दुगुनी जानो, उत्तर दक्षिण सम मानो॥13॥

ॐ ह्रीं सहायक नदी-संख्या-दिशा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाँच सौ छब्बिस सही जानो, छह बटे उन्नीस पहचानो।
योजन विस्तार बताया, शुभ भरत क्षेत्र का गाया॥14॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र विस्तार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब पर्वत क्षेत्र बताए, जो विदेह क्षेत्र तक गाए।
दुगुना-दुगुना विस्तारा, सम उत्तर दक्षिण सारा॥15॥

ॐ ह्रीं सहायक नदी प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतैरावत क्षेत्र में गाए, हो वृद्धि ह्रास बतलाए।
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जानो, ना अन्य क्षेत्र हो मानो॥16॥

ॐ ह्रीं भरतैरावत क्षेत्र विस्तार काल प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमवत हरिवर्ष कुरू द्वय, आयू इक द्वय पल्य त्रय।
नर पशु की उत्तम गाई, लघु अन्तर्मुहूर्त बताई॥17॥

ॐ ह्रीं पर्वत तथा क्षेत्र विस्तार एवं आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर वासी भी पावें, भोगों में समय बितावें।
आयू विदेह में जानो, संख्यात वर्ष की मानो॥18॥

ॐ ह्रीं आयु उत्तर कुरुआदि वर्णन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक सौ नब्बे वा गाया, शुभ क्षेत्र विभाग बताया।
शुभ द्वीप जम्बु से जानो, इस भरत क्षेत्र का मानो॥19॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र विस्तार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जम्बू से दोगुण बताए, द्वय खण्ड धातकी गाए।
पुष्करार्ध द्वीप भी जानो, द्रह क्षेत्र सु पर्वत मानो॥20॥

ॐ ह्रीं धातकी पुष्करार्द्ध स्थित क्षेत्र पर्वत संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्तर गिरि तक गाए, नर आर्य म्लेच्छ बतलाए।
हैं आर्य सभ्य शुभकारी, होते म्लेच्छ दुठ भारी॥21॥

ॐ ह्रीं मनुष्य क्षेत्र, भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भरतैरावत विदेह में भाई, है कर्म भूमि सुखदायी।
कुरु उत्तर देव बताए, जो भोग भूमि कहलाए।।22।।
ॐ ह्रीं कर्मभूमि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

अधोलोक मध्य का गाया, वर्णन इसमें बतलाया।
हम पूजा करते भाई, श्रुत की मन से हर्षाई।।
ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तृतीय-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय

(मोतियादाम)

बताए देव चार परकार, भवनत्रिक पाते लेश्या चार।
कृष्ण अरु नील कापोत सुपीत, कही यह काल अनादी रीत।।11।।
ॐ ह्रीं देवगति तथा लेश्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भेद देवों के दश अठ पाँच, रहे द्वादश कल्पों तक सांच।
भवनवासी व्यन्तर ज्योतीष, कल्पवासी, कहते जिन ईश।।2।।
ॐ ह्रीं देवगति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र सामानिक पालानीक, पारिषद आत्म रक्ष प्रकीर्ण।
त्रायस्त्रिंश किल्विश आभीयोग, भेद देवों के रहे मनोग।।3।।
ॐ ह्रीं इन्द्र आदि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रायस्त्रिंश लोकपाल ना होय, देव व्यन्तर ज्योतिष में सोय।
भवनवासी व्यन्तर में देव, इन्द्र दो-दो ही रहें सदैव।।4।।
ॐ ह्रीं त्रायत्रिंश आदि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काय प्रवीचार स्वर्ग ईशान, शेष स्पर्श रूप वच वान।
रहा अच्युत तक मन प्रवीचार, शेष सब गाये अप्रवीचार।।5।।
ॐ ह्रीं देवगति सुख प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भवनवासी हैं असुर सुनाग, सुपर्ण विद्युत अग्नी सुवात।
स्तनित उदधि दीप दिक् जान, कहे दश आगम से पहिचान।।6।।
ॐ ह्रीं भवनवासी देव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव किन्नर किम्पुरुष गंधर्व, महोरग, यक्ष सु राक्षस सर्व।
भूत अरु रहे पिशाची देव, रहे व्यन्तर के भेद सदैव।।7।।
ॐ ह्रीं व्यन्तर देव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य शशि ग्रह नक्षत्र प्रकीर्ण, रहे तारागण सदा विकीर्ण।
प्रदक्षिणा करते देव विमान, मेरु की मनुज लोक में जान।।8।।
ॐ ह्रीं ज्योतिषदेव भेद तथा गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभाजन होय काल का भ्रात, इसी कारण हो दिन या रात।
लोक मानव के बाहर देव, सभी स्थिर हो रहें सदैव।।9।।
ॐ ह्रीं ज्योतिष देव गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कल्प अरु कल्पातीत सदैव, रहें वैमानिक वासी देव।
विमान ऊपर ऊपर सब जान, श्रेष्ठ देवों की यह पहिचान।।10।।
ॐ ह्रीं वैमानिक देव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सौधर्म ईशान अरु सनत कुमार, माहेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर शुभकार।
लान्तव कापिष्ठ शुक्र पहिचान, महाशुक्र शतार सहस्रार मान।।
देव आनत प्राणत शुभकार, और आरणेन्द्र अच्युत मनहार।
ग्रैवेयक अरु अनुदिश नौ जान, अनुत्तर विजयादि पञ्च महान।।11।।
ॐ ह्रीं कल्प विमान भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्थिति प्रभाव सुख द्युति मनहार, लेश्या इन्द्रिय विषयाहार।
स्वर्ग में ऊपर वृद्धी पाँय, अवधि विषय भी बढ़ते जाँय।।12।।
ॐ ह्रीं वैमानिक देवस्य विशेषता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गती अरु शरीर परिग्रहवान, कहा देवों में जो अभिमान।
स्वर्ग में ऊपर ऊपर हीन, देव पाके रहते स्वाधीन।।13।।
ॐ ह्रीं वैमानिक देवस्य हीनाधिकता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगल दो तीन शेष में जान, लेश्या पीत पद्म सित मान।
रहे ग्रीवक के नीचे कल्प, शेष कहलाए सभी अकल्प॥14॥

ॐ ह्रीं वैमानिक देवस्य लेश्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक सारस्वत आदित्य, वह्नि अरुण गर्दतोय तुषित्य।
बताए अव्याबाध अरिष्ट, देव लौकान्तिक वासी इष्ट॥15॥

ॐ ह्रीं लोकान्तिक देवस्य भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय आदिक में भव दो धार, जीव हो जाते भव से पार।
छोड़कर सुर नर नारक पर्याय, जीव की तिर्यंच गती कहलाय॥16॥

ॐ ह्रीं अन्य देव सम्बन्धी चरम शरीरादि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु इक सागर असुर कुमार, नाग अरु सुपर्ण द्वीप ये चार।
पल्य त्रय अर्ध पल्य हो हीन, सभी की जानो ज्ञान प्रवीण॥17॥

ॐ ह्रीं भवनवासी देवस्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु पावें सौधर्मैशान, श्रेष्ठ साधिक दो सागर जान।
सात सागर से ज्यादा इन्द्र, प्राप्त करते सानत माहेन्द्र॥18॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान सानत कुमार महेन्द्र देव सम्बन्धी आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष में सात जोड़कर तीन, सप्त नौ एकादश गिन लीन।
त्रयोदश और पञ्चदश जान, स्वर्ग सोलहवें तक पहिचान॥19॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मादि अष्ट युगल विमानस्थ देवायु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग सोलह से नव ग्रैवेक, बढ़ाएँ सागर फिर इक एक।
सर्व अनुदिश में हों बत्तीस, अनुत्तर सर्वार्थसिद्धि तैंतीस॥20॥

ॐ ह्रीं ग्रैवेयक अच्युतादि अनुत्तर पर्यन्त देवायु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पल्य साधिक सोधमैंशान, जघन्य पाते आयू पहिचान।
पूर्व युग की उत्कृष्ट महान, आगे की है जघन्य यह मान॥21॥

ॐ ह्रीं देवस्य जघन्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नरक पहले से भावन वान, जघन्य आयू दश सहस की मान।
आयु उत्कृष्ट प्रथम में पाय, अग्र की वह जघन्य कहलाय॥22॥

ॐ ह्रीं नरक तथा भवन व्यन्तर देवस्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव व्यन्तर ज्योतिष की उत्कृष्ट, पल्य इक साधिक गाई इष्ट।
जघन्य ज्योतिष की अष्टम भाग, रहा उत्कृष्ट का यही विभाग॥23॥

ॐ ह्रीं व्यन्तर ज्योतिष देवस्य उत्कृष्ट आयु प्रतिपादक तत्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु लौकान्तिक की पहिचान, आठ सागर की रही महान।
नहीं इनमें हीनाधिक जान, कथन आगम का रहा प्रधान॥24॥

ॐ ह्रीं लौकान्तिक देव आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

दोहा- देवों का वर्णन किया, गया यहाँ पर जान।
इस चौथे अध्याय की, महिमा रही महान॥
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, पाकर आगम ज्ञान।
यही भावना है 'विशद', पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित चतुर्थ-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम अध्याय

(रेखताछन्द)

अजीव काय धर्माधर्माकाश, और है पुद्गल द्रव्य विशेष।
जीव है चेतन द्रव्य महान, अजीव गाये हैं द्रव्य अशेष॥1॥

ॐ ह्रीं अजीव काय द्रव्य प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरूपी द्रव्य अवस्थित नित्य, कहा है पुद्गल रूपी द्रव्य।
रहित हैं क्रिया से जो एकेक, आकाश तक के यह सारे द्रव्य॥2॥
ॐ ह्रीं द्रव्य विशेषता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव इक धर्माधर्म विशेष, बताए इनके असंख्य प्रदेश।
अनन्त आकाश है पुदगल जान, त्रिविध जिसके अणु है अप्रदेश॥3॥
ॐ ह्रीं द्रव्य प्रदेश संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहा है लोकाकाशवगाह, पूर्णतः धर्म अधर्म विशेष।
रहा है क्षीर में नीर समान, मिले आकाश में पूर्ण प्रदेश॥4॥
ॐ ह्रीं प्रदेश तथा अणु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकादिक संख्यातीत अनन्त, रहा पुदगल का भी अवगाह।
जीव का असंख्यातादि प्रदेश, अवगाहन पूर्ण लोक में पाय॥5॥
ॐ ह्रीं जीव पुद्गल द्रव्यस्य अवगाहन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रदेशों में संहार विसर्प, सदा ही होय सुदीप समान।
रहा आगम का कथन विशेष, बताई द्रव्यों की पहिचान॥6॥
ॐ ह्रीं जीव प्रदेश प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव पुद्गल का गति उपकार, कहा है धर्म द्रव्य का जान।
अधर्म का स्थिति रहा विशेष, आकाश का है अवकाश महान॥7॥
ॐ ह्रीं धर्माधर्माकाश द्रव्यस्थ उपकार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन तन मन अरु श्वाशोच्छवास, द्रव्य पुद्गल का यह उपकार।
रहा सुख दुख जीवन अरु अंत, कहे ज्ञानी जग के अनगार॥8॥
ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्यस्योपकार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परस्पर जीव करें उपकार, काल का भी उपकार महान।
वर्तना अरु परिणाम क्रिया, परत्व अपरत्व यही पहिचान॥9॥
ॐ ह्रीं जीव तथा काल द्रव्यस्य उपकार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श रस गंध वर्ण संयुक्त, द्रव्य पुद्गल भी रहा महान।
शब्द स्थूल सूक्ष्म संस्थान, भेदतम छाया आतपवान॥10॥
ॐ ह्रीं पुद्गल लक्षण तथा पर्याय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्ध अरु होता है उद्योत, प्राप्त करता पुद्गल पर्याय।
अणू स्कन्ध रहे दो भेद, प्राप्त जिसमें पुद्गल कहलाय॥11॥
ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्य अणु स्कन्ध भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद संघात से हो स्कंध, भेद से अणु का हो निर्माण।
भेद संघात से चाक्षुस होय, किया जिनवर ने ये व्याख्यान॥12॥
ॐ ह्रीं द्रव्य सामन्य विशेष लक्षण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य का लक्षण है सत् रूप, ध्रोव्य व्यय हो उत्पाद संयुक्त।
ध्रोव्य का भाव बताया नित्य, वस्तु हो अर्पितानर्पित युक्त॥13॥
ॐ ह्रीं अर्पितानर्पित तथा बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष स्निग्ध से होता बन्ध, जघन्य गुण सम भी रहा अबन्ध।
अधिक गुण परिणामे निज रूप, द्व्यधिक गुण में होता है बन्ध॥14॥
ॐ ह्रीं परमाणु बन्ध निषेध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य होता गुण पर्ययवान, काल का समय बतायानन्त।
रहे गुण द्रव्य का आश्रय पाय, भाव परिणाम कहे जिन संत॥15॥
ॐ ह्रीं द्रव्य तथा काल द्रव्य प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

द्रव्य अजीव बताए जो, किया यहाँ व्याख्यान।
उनके गुण पर्याय का, लक्षण रहा महान॥

बन्धाबन्ध का भी किया, यहाँ कथन शुभकार।
ऐसे जिन श्रुत को विशद, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित पंचम-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम अध्याय

(चाल छन्द)

मन वचन काय की जानो, हो क्रिया से आस्रव मानो।
पुण्यास्त्रव शुभ से गाया, अरु अशुभ से पाप बताया॥1॥

ॐ ह्रीं आश्रवलक्षण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सांपराय कषाय के धारी, आस्रव पाते हैं भारी।
जो रहित कषाय बताए, वह ईर्यापथ ही पाए॥2॥

ॐ ह्रीं आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय कषाय व्रत गाये, पन चउ पन भेद गिनाए।
पच्चीस क्रियाएँ जानो, ये भेद उन्तालिस मानो॥3॥

ॐ ह्रीं सांपरायिक आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

तीव्र मंद अरु ज्ञाताज्ञात, भावाधिकरण रहा विख्यात।
वीर्य से आस्त्रव होय विशेष, जीवाजीव आधार अशेष॥4॥

ॐ ह्रीं आश्रव विशेष भेद तथा अधिकरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्रम्भ समारम्भारम्भ, कृत कारित अनुमत प्रारम्भ।
त्रय योग कषाय मिलाए, आस्त्रव शत अष्ट कहाए॥5॥

ॐ ह्रीं जीवाधिकरण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निक्षेप संयोगी, निसर्ग द्वि चउ द्वि त्रियोगी।
सब निर्वर्तना भेद सुग्यारह गाए, अजीवाधिकरण के पाए॥6॥

ॐ ह्रीं अजीवाधिकरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मात्सर्य प्रदोष आसादन, निह्नव अन्तराय स्व घातन।
यह दर्श ज्ञान के पाए, आस्रव के कारण गाए॥7॥

ॐ ह्रीं ज्ञान दर्शनावरण आश्रव हेतु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख शोक ताप आक्रन्दन, वध और कहा परिदेवन।
निज पर के हेतु उपाए, वेदनीय अशाता पाए॥8॥

ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्म आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रति भूत अनुकम्पा दानी, संयम सराग धर ज्ञानी।
क्षम शौच योग का धारी, शाता वेदी हो भारी॥9॥

ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्म आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि श्रुत धर्म बताया, गुरु संघ का निन्दक गाया।
दर्शन मोह चारित पाएँ, परिणाम कषाय जगाएँ॥10॥

ॐ ह्रीं दर्शनमोहनीय तथा चारित्रमोहनीय आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु संगारम्भ जो पाए, नरकायु बन्ध उपाए।
हो मायाचारी प्राणी, पशु गति बाँधें अज्ञानी॥11॥

ॐ ह्रीं नरक तथा तिर्यञ्च आयु आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरम्भ अल्प मृदु भावी, नर आयू बन्ध स्वभावी।
ना शील व्रतों को पाएँ, चारों गति में उपजाएँ॥12॥

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो रागी संयमी प्राणी, हों बाल तपी अज्ञानी।
सम्यक् दर्शन जो पाएँ, वह देवगती उपजाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं देवायु आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो योग कुटिलताए पाएँ, अरु विसंवाद कर जाएँ।
वह अशुभ नाम के धारी, विपरीत नाम शुभकारी॥14॥

ॐ ह्रीं शुभाशुभ कर्माश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो सोलह भावना भाए, वह तीर्थंकर पद पाए।
वे शिव पदवी को पाते, गुरु उमास्वामी यह गाते॥15॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर नामकर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर निन्दा गुण आच्छादी, निज गुण के प्रशंसा वादी।
वे नीच गोत्र का भाई, आस्रव पावें दुखदायी॥16॥

ॐ ह्रीं नीचगोत्र कर्म आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपरीत पूर्व के जानो, लघु वृत्ती वाले मानो।
वे उच्च गोत्र का भाई, आस्रव पावें सुखदायी॥17॥

ॐ ह्रीं उच्चगोत्र कर्म आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई विघ्न डालते प्राणी, दानादिक में अज्ञानी।
वे अन्तराय को पाएँ, कर्मास्रव नर प्रगटाएँ॥18॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

कर्मास्त्रव करते प्राणी, जग भटक रहे अज्ञानी।
जो श्रद्धा ज्ञान जगाएँ, वे प्राणी शिव पद पाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित षष्ठम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्योपूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम अध्याय

(पद्धरि छन्द)

हिंसा अनृत स्तेय जान, मैथुन परिग्रह भी रहा मान।
इनसे विरक्त व्रती कहाय, जो देश सर्व व्रत कहा जाय॥1॥

ॐ ह्रीं शुभाश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत में स्थिरता हेतु जान, हैं पाँच पाँच जग में महान।
भावनाएँ भाएँ भव्य जीव, वह पाएँ अतिशय पुण्य अतीव॥2॥

ॐ ह्रीं व्रतस्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन वचन गुप्ति ईर्या महान, समीति आदान निक्षेप मान।
भोजन आलोकित पान सोय, इनसे हिंसा में कमी होय॥3॥

ॐ ह्रीं अहिंसा व्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध लोभ भीरुत्व खोय, अरु हास्य क्रिया से बचे सोय।
आगम अनुसारी वचन वान, हो सत्य व्रती जग में महान॥4॥

ॐ ह्रीं सत्य व्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह शून्य विमोचित वास पाय, जहँ रुके किसी को ना भगाय।
हो विसंवाद बिन भैक्ष्य शुद्धि, ये अचौर्य व्रती की रही बुद्धि॥5॥

ॐ ह्रीं अचौर्यव्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज क्रिया कथा अरु देह राग, रति अनुस्मरण रस पुष्ट त्याग।
श्रृंगार देह से जो विहीन, वह ब्रह्मचर्य व्रत रहे लीन॥6॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यव्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विषय बताए अमनोग, इन्द्रिय के या होवे मनोग।
इनका करते जो जीव त्याग, वे अपरिग्रही हैं पुण्य भाग॥7॥

ॐ ह्रीं परिग्रह त्याग व्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो पाँच पाप हिन्सादि जान, ये इह पर भव में दुखद मान।
इनसे अवद्य होवे अपाय, का दर्श जीव दुखकार पाय॥8॥

ॐ ह्रीं हिंसादि त्यागस्य अन्य भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मैत्री प्रमोद कारुण्य जान, माध्यस्थ भाव ये क्रमिक मान।
हो जीव गुणाधिक क्लिश्यमान, विपरीत बुद्धि धर से प्रधान॥9॥

ॐ ह्रीं मैत्री आदि भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो जगत काय का जो स्वभाव, जिससे विराग संवेग भाव।
होवे प्रमाद से जीव घात, हिंसा कहलाए यही भ्रात॥10॥

ॐ ह्रीं संवेग वैराग्य भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है असद कथन अनृत सुजान, स्तेय अदत्तादान जान।
अब्रह्म भाव मैथुन कहाय, मूर्छा परिग्रह कहते जिनाय॥11॥

ॐ ह्रीं अनृतस्तेय अब्रह्म परिग्रह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शल्य रहित जो व्रती जान, अनगारागारी रहे मान।
पञ्चाणुव्रत धारी है अगार, अनगार सकल व्रत रहे धार॥12॥

ॐ ह्रीं व्रती अणुव्रती महाव्रती परिभाषा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्देशानर्थ विरती महान, सामायिक प्रोषधोपवास मान।
भोगोपभोग का करता प्रमाण, व्रति रखे अतिथि का सदा ध्यान॥13॥

ॐ ह्रीं अणुव्रतस्य सहायक व्रत प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मरण काल को निकट जान, लेवे सल्लेखना जो महान।
वह महाव्रतों का भाव पाय, तन परिजन में ना नेह लाय॥14॥

ॐ ह्रीं सल्लेखना अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शंका कांक्षा विचिकित्स पाय, अन्य दृष्टि प्रशंसा संस्तवाय।
व्रत शील के जानो अतीचार, पाँच-पाँच बताए जिनाचार॥15॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन, व्रत शीलातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसाणुव्रत के अतीचार, वध बन्धन लादे अतीभार।
पीड़ा दे रोके खान पान, ये पाँच बताए हैं प्रधान॥16॥

ॐ ह्रीं अहिंसा अणुव्रत अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्योपदेश रहोभ्याख्यान, क्रिया कूट लेख का करे काम।
साकार मंत्र न्यासापहार, सत्याणु व्रत के अतीचार॥17॥

ॐ ह्रीं सत्य अणुव्रत अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तेन प्रयोग तदाहृतादान, हो हीनाधिक मानोपमान।
राजाज्ञा तज प्रतिरूपकार, हैं अचौर्याणुव्रत के अतीचार॥18॥

ॐ ह्रीं अचौर्य अणुव्रत पंचातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रीड़ा अनंग पर का विवाह, अरु काम की होवे तीव्र चाह।
चाहे ग्रहीत अग्रहीत नार, ब्रह्मचर्याणुव्रत के अतीचार॥19॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याणुव्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोना चांदी धन धान्य जान, अरु क्षेत्र वास्तु गाया प्रधान।
हो कुप्य दास दासी विचार, ये अपरिग्रह व्रत के अतीचार॥20॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह अणुव्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिश ऊर्ध्व अधः या तिर्यग जान, ना व्रत सीमा का रखें ध्यान।
जो क्षेत्र वृद्धि करते अपार, दिग्व्रत के पाँच हैं अतीचार॥21॥

ॐ ह्रीं दिग्व्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आनयन होय रूपानुपात, सीमा के बाहर करें बात।
पुदगल क्षेपण प्रेषण विचार, ये देश व्रती के अतीचार॥22॥

ॐ ह्रीं देशव्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कन्दर्प कौत्कुच्य हैं प्रधान, मौखर्य असमीक्षादिकरण जान।
भोगोपभोग का ना विचार, ये अनर्थ दण्ड के अतीचार॥23॥

ॐ ह्रीं दण्ड व्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन वचन काय की दुष्प्रवृत्ति, आदर की जिनकी नाहि वृत्ति।
जो नित्य क्रिया में करें भूल, अतिचार सामायिक के रहे मूल॥24॥

ॐ ह्रीं सामायिक व्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन देखे शोधे वस्तु जान, कर ग्रहण त्याग बिस्तर बिछान।
हो क्रिया अनादर और भूल, अतिचार प्रोषध के रहे मूल॥25॥

ॐ ह्रीं प्रोषधोपवास व्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषव सचित्त सम्बन्ध वान, आहार मिश्र दु:पक्व जान।
भोगोपभोग व्रत का प्रमाण, ये अतीचार हैं पाँच मान॥26॥

ॐ ह्रीं उपभोग परिभोग परिमाणव्रत अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निक्षेप सचित्त अपिधान जान, कालातिक्रम मात्सर्य मान।
पर की वस्तू देवें दिलाय, अतिथि विभाग अतिचार पाय॥27॥

ॐ ह्रीं अतिथि संविभाग व्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन मृत्यू की चाहवान मित्रानुराग अरु हो निदान।
हो सुखानुबन्ध का भी विचार, सल्लेखना के हैं अतीचार॥28॥

ॐ ह्रीं संल्लेखना व्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो त्याग स्व-पर का होय दान, विधि द्रव्य आदि जैसा विधान।
जो दाता अरु पात्रानुसार, होवे विशेष जो कई प्रकार॥29॥

ॐ ह्रीं दानलक्षण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

जो समीचीन श्रद्धान पाय, सम्यक् चारित में मन लगाय।
स्थिर होकर के करे ध्यान, वह प्राणी पाए विशद ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद नय गर्भित सप्तम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम अध्याय

(पाइता छन्द)

नर मिथ्या योग कषाएँ, अविरति प्रमाद भी पाएँ।
हो बन्ध कषाय के द्वारा, पुद्गल आने पर सारा॥1॥

ॐ ह्रीं बन्ध कारण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चउ भेद बन्ध के गाए, प्रकृति प्रदेश बतलाए।
स्थिति अनुभाग भी जानो, हो योग कषाय से मानो॥2॥

ॐ ह्रीं बन्ध भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दर्शनावरण बताया, वेदनीय मोह आयू गाया।
नाम गोत्र अन्तराय जानो, भेद आदि बन्ध के मानो॥3॥

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच नव द्वय अट्ठाइस गाये, चउ ब्यालिस दो बतलाए।
द्वि पाँच भेद यह जानो, आठों कर्मों के मानो॥4॥

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्धस्य उत्तर भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मति श्रुतावधी बतलाया, मन:पर्यय केवल गाया।
ये ज्ञानावरण कहाए, नौ दर्शनावरण बताए॥5॥

ॐ ह्रीं ज्ञान दर्शनावरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन नींद के भेद बताए, अरु चक्षु अचक्षु भी गाए।
अवधि केवल दर्शन जानो, नों भेद पूर्ण ये मानो॥6॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

वेदनीय है साता असाता, मोह दर्श चारित्र कहाता।
तीन भेद दर्शन के गाए, पच्चिस चारित्र मोह कहाए॥7॥

ॐ ह्रीं वेदनीय मोहनीय कर्म बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर नारक पशु बतलाए, चार भेद आयू के गाए।
भेद तिरानवे नाम के जानो, जिससे रचित होय तन मानो॥8॥

ॐ ह्रीं आयु नाम कर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च नीच दो गोत्र कहाए, अन्तराय भोगोपभोग गाए।
दान लाभ अरु वीर्य बताए, पाँच भेद जिसके कहलाए॥9॥

ॐ ह्रीं गोत्र तथा अन्तराय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणादिक त्रय जानो, अन्तराय भी साथ में मानो।
उत्कृष्ट स्थिति सागर गाई, कोड़ा कोड़ी तीस बताई॥10॥

ॐ ह्रीं ज्ञानदर्शनावरण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मोह कर्म की सत्तर गाई, नाम गोत्र की बीस बताई।
आयु की तैंतिस सागर जानो, अब जघन्य आगे पहिचानो॥11॥

ॐ ह्रीं मोह नाम गोत्र कर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारह मुहूर्त्त वेदनीय पाए, नाम गोत्र मुहूर्त्त अठ गाए।
आगे शेष कर्म की जानो, अन्तर्मुहूर्त्त बताई मानो॥12॥

ॐ ह्रीं वेदनीय गोत्र नाम कर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय अनुभाग कहाए, यथा नाम गुण को जो पाए।
कर्म निर्जरा फिर हो जाए, दो प्रकार की जो कहलाए॥13॥

ॐ ह्रीं अनुभाग बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाम प्रत्यय योग विशेषात, एक क्षेत्रावगाह प्रदेशात।
अनन्त प्रदेशों में संबंध, यह प्रदेश कहलाए बंध॥14॥

ॐ ह्रीं प्रकृति प्रदेश स्थिति बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य रूप शुभ आयू नाम, उच्च गोत्र सद् वेद प्रधान।
पाप रूप सब कर्म अशेष, ऐसा गाए वीर जिनेश॥15॥

ॐ ह्रीं पुण्य पाप प्रकृति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

बन्धोदय कर्मों के भेद, सभी बताए यहाँ प्रभेद।
करने को हम कर्म विनाश, पूज रहे हो ज्ञान प्रकाश।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित अष्टम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम अध्याय

(सुखमा छन्द)

संवर आस्त्रव रोध कहाय, छह प्रकार से होता जाय।
गुप्ति समिति परिषह जय जान, धर्मानुप्रेक्षा-चारित्रवान॥1॥

ॐ ह्रीं संवर तथा संवर हेतु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जरा भी तप से नर पाए, योग रोध गुप्ती कहलाए।
ईर्या भाषा ऐषणादान, निक्षेपोत्सर्ग समिति पहिचान॥2॥

ॐ ह्रीं गुप्ति समिति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षमा मार्दव आर्जव जान, शौच सत्य तप संयम मान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य जान, कहे धर्म के दश सोपान॥3॥

ॐ ह्रीं दसधर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनित्याशरण संसार एकत्व, अन्य अशुचि आस्त्रव जग सत्व।
संवर निर्जरा दुर्लभ बोधि, धर्मानुप्रेक्षा द्वादश शोधि॥4॥

ॐ ह्रीं अनुप्रेक्षा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषादिक परिषह बीस, जीतें जिनको जैन ऋशीष।
निर्जरार्थ शिवमार्ग सुजान, हेतू परिषह सहें महान॥5॥

ॐ ह्रीं परिषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश से बारह गुण स्थान, चौदह परिषह कहे सुजान।
ग्यारह परिषह जिन के जान, साम्पराय वादर सब मान॥6॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो परिषह प्रज्ञा अज्ञान, ज्ञानावरणोदय से जान।
अलाभ अदर्शन परिषह पाय, उदय होय जब मोहान्तराय॥7॥

ॐ ह्रीं ज्ञानदर्शनावरणस्योदये परीषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोह से परिषह सात, नाग्न्यारति याचना विख्यात।
याचनाक्रोष स्त्री पुरस्कार, प्राणी पाते बारम्बार॥8॥

ॐ ह्रीं चरित्रमोहस्योदये परीषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

और कहे जो परिषह शेष, वेदनीय से होंय अशेष।
एक आदि करके उन्नीस, परिषह युगपद पाएँ ऋशीष॥9॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मस्योदये परीषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित सामायिक कहलाय, परिहार विशुद्धी सूक्ष्म कषाय।
छेदोपस्थापना है यथाख्यात, पञ्चागम में हैं विख्यात॥10॥

ॐ ह्रीं चरित्र प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवमौदर्य वृत्ती संख्यान, काय क्लेश रस त्याग प्रधान।
विविक्त शैय्याशन अनशन जान, बाह्य सुतप छह रहे महान॥11॥

ॐ ह्रीं बहिरंग तप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंतरंग तप प्रायश्चित् ध्यान, स्वाध्याय व्युत्सर्ग महान।
वैय्यावृत्ति अरु विनय कहाय, तप का धारी शिव पद पाय॥12॥

ॐ ह्रीं अंतरंग तप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित् के नौ विनय के चार, वैय्यावृत्ति के दश शुभकार
स्वाध्याय के पाँच है भेद, द्वय व्युत्सर्ग के हरते खेद॥13॥

ॐ ह्रीं अंतरंगतपो-भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रतिक्रमण आलोचन जान, उभय विवेक व्युत्सर्ग महान।
परिहारोपस्थापना अरु तप छेद, प्रायश्चित के यह नौ भेद॥14॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्रोपचार, विनय बताया चार प्रकार।
मुनिवर पालें भली प्रकार, कर्म नाश पावें भव पार॥15॥

ॐ ह्रीं विनय अन्तरंग तप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्योपाध्याय शैक्ष्य अरु ग्लान, तपसी गण कुल संघ महान।
साधू मनोज्ञ कहे दश भेद, वैय्यावृत्ति कर हरते खेद॥16॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाचना प्रच्छना धर्मोपदेश, अनुप्रेक्षा आम्नाय विशेष।
स्वाध्याय के भेद प्रधान, बाह्याभ्यन्तर परिग्रह जान॥17॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आर्त्त रौद्र धर्म शुक्ल-ध्यान, अन्तर्मुहूर्त को होय महान।
परे मोक्ष के हेतु प्रधान, शुभ संघनन धर पाय मान॥18॥

ॐ ह्रीं ध्यान तथा मोक्ष हेतु ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमनोज्ञ वस्तू आ जाय, उसको चिन्ता सदा सताय।
यह अनिष्ट संयोगजध्यान, इष्ट वियोग विपरीत सुजान॥19॥

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोग इष्ट वियोजक आर्त्तध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ा चिंतन रहा जो ध्यान, जीव दुखी हों जिसमें जान।
त्याग का फल चाहे इन्सान, कहा गया वह ध्यान निदान॥20॥

ॐ ह्रीं अजीवाधिकरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अविरत देशव्रती व्रतवान, साधू प्रमत्त संयत गुणवान।
इनके होता आर्त्त ध्यान, ना हो साधु को ध्यान निदान॥21॥

ॐ ह्रीं ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविरत देश व्रती के ध्यान, हिंसानृत स्तेय हो मान।
विषय संरक्षण भी वह पाय, रोद्र ध्यान धारी कहलाय॥22॥

ॐ ह्रीं रौद्र ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञापाय विपाक संस्थान, विचय कहा ये धर्म ध्यान।
आदि के दो पूरब धर ध्यान, पाँए केवली अन्तिम जान॥23॥

ॐ ह्रीं धर्मध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक्त्व एकत्व वितर्क सुजान, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती मान।
व्युपरत क्रिया निवृत्ती ध्यान, शुक्ल ध्यान ये चार महान॥24॥

ॐ ह्रीं शुक्ल ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्रमशः तीन एक धर योग, काय योग फिर होय अयोग।
एकाश्रय सवितर्क वीचार, पूर्व द्वितिय होता अविचार॥25॥
ॐ ह्रीं गुणस्थाने शुक्ल ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो वितर्क वाला श्रुतज्ञान, वीचार होता अर्थ प्रधान।
व्यंजन योग की हो संक्रान्ति, मिटे जीव के मन की भ्रान्ति॥26॥
ॐ ह्रीं ध्यान भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यक्दृष्टी श्रावक जान, विरतानन्त वियोजक मान।
क्षपकोशमकोपशांत विमोह, क्षपक क्षीण मोह अरु जिन होय॥27॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दृष्टि जीव निर्जरा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
क्रमशः असंख्यात गुण जान, होय निर्जरा ऐसा मान।
रहा निर्जरा का क्रम भ्रात, जैनागम में है विख्यात॥28॥
ॐ ह्रीं असंख्यात गुण निर्जरा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पुलाक वकुश निर्ग्रन्थ कुशील, स्नातक है धारी शील।
मुक्ति वधु के बनते कंत, पाँच भेद युत होते सन्त॥29॥
ॐ ह्रीं मुनि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संयतश्रुत प्रति सेवनवान, तीर्थ लिंग लेश्या स्थान।
है उपपाद स्थान विकल्प, मुनियों का ये कथन है अल्प॥30॥
ॐ ह्रीं मुनिभेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

संवर सहित निर्जरा होय, तप से करते प्राणी सोय।
जिसका फल गाया निर्वाण, 'विशद' प्राप्त हम करें महान॥
ॐ ह्रीं स्यादवादनय गर्भित नवम अध्याय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम अध्याय

(ताटंक छन्द)

मोह कर्म का क्षय होने से, ज्ञान दर्शानावरणान्तराय।
का क्षय हो जाने से प्राणी, केवल ज्ञान स्वयं प्रगटाय॥1॥
ॐ ह्रीं घाति कर्म क्षय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बन्ध के हेतू का क्षय होते, जीव निर्जरा करें महान।
सर्व कर्म का क्षय होते ही, मोक्ष प्राप्त होता निर्वाण॥2॥
ॐ ह्रीं मोक्ष स्वरूप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औपशमिक आदिक भावों का, अरु भव्यत्व भाव को नाश।
केवल सम्यक्त्व ज्ञान सुदर्शन, सिद्धत्व भाव का होय प्रकाश॥3॥
ॐ ह्रीं भावकर्म मोक्ष प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म के क्षय से ऊर्ध्व गमन कर, जावे जीव लोक के अन्त।
है अभाव धर्मास्तिकाय का, ऐसा कहते ज्ञानी संत॥4॥
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगमन स्वभावस्वरूप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व प्रयोग के द्वारा हो अरु, बन्ध का भी हो जाए क्षय।
बन्ध छेद हो जाने पर वह, उर्ध्व स्वभाव पाए अक्षय॥5॥
ॐ ह्रीं ऊर्ध्व गमन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चक्र घूमता ज्यों कुम्हार का, लेपहीन तुम्बी वत् जान।
हो एरण्ड बीज शिख अग्नी, सम दृष्टांत जीव के मान॥6॥
ॐ ह्रीं मुक्त जीव स्वभावोदाहरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षेत्र काल गति लिंग तीर्थ शुभ, प्रत्येक बोधित बुद्ध चरित्र।
ज्ञानावगहनान्तर संख्या है, अल्पबहुत्व का भेद पवित्र॥7॥
ॐ ह्रीं सिद्ध भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

कर्म घातियाँ का क्षय होते, प्राणी पाते केवल ज्ञान।
सर्व कर्म क्षयते हो मुक्ती, प्राप्त करें हम पद निर्वाण॥
मोक्ष शास्त्र की पूजा करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँगे।
मोक्ष मार्ग पर बढ़कर हम भी, सिद्ध शिला पर जाएँगे॥
ॐ ह्रीं श्री स्यादवाद नय गर्भित दशम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य–ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सर्व तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- निज में निज के रमण का, जागा मन में भाव।
गाते हैं जयमालिका, पाने निज स्वभाव॥

(शम्भू छंद)

काल अनादी से सब प्राणी, इस जग में भटकाए हैं।
मोह महामद को पीने से, कभी सम्हल न पाए हैं॥
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तीर्थंकर होते चौबीस।
इन्द्र और नागेन्द्र भाव से, चरणों में झुकते शत् ईश॥
गणधर के द्वारा जिनवर की, वाणी झेली जाती है।
हेयाहेय का ज्ञान जगत् के, जीवों को बतलाती है॥
अनुक्रम से जिनवाणी को फिर, आचार्यों ने पाया है।
रत्नत्रय से भेद ज्ञान को, अपने हृदय जगाया है॥
जिनवाणी से निज का अनुभव, आचार्यों ने पाया है।
मोक्ष मार्ग यह मोक्ष प्रदायक, जीवों को दर्शाया है॥
जैनाचार्य उमास्वामी ने, मंगलमय यह कार्य किया।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र यह, मंगलमय निर्माण किया॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, मोक्षमार्ग का हो निर्माण।
इस पर चलने वाला प्राणी, निश्चय पाएगा निर्वाण॥
रत्नत्रय की ध्वजा पताका, हमको अब फहराना है।
ज्ञान शक्ति से मुक्ती पथ पर, हमको बढ़ते जाना है॥
लोकजयी सर्वोत्तम ध्वज है, महिमा अपरंपार कही।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, अतिशय मंगलकार रही॥
सप्त तत्त्व अरु छह द्रव्यों का, जिसमें सुन्दर कथन किया।
अनेकांत अरु स्याद्वाद के, द्वारा जिसका मथन किया॥
जीवाजीव द्रव्य का लक्षण, बतलाया है सविस्तार।
उनके भेद प्रभेदों का भी, वर्णन किया है मंगलकार॥

सप्त तत्त्व की व्याख्या जिसमें, बतलाई है भली प्रकार।
वर्णन किया गया है पावन, जिनवर वाणी के अनुसार॥
हेय तत्त्व को हेय बताया, उपादेय को कहा महान्।
जिसके द्वारा पा लेते हैं, जग के प्राणी सम्यक्ज्ञान॥
ज्ञानानंद स्वभावी होकर, करता राग-द्वेष को दूर।
सदाचरण को पाने वाला, शुभ भावों से हो भरपूर॥
स्वर्ण कीच में रहकर के ज्यों, होता नहीं है उससे लिप्त।
त्यों ज्ञानी जन जग में रहकर, पूर्ण रूप से रहें अलिप्त॥
रागभाव का हो अभाव तो, होता नहीं कर्म का बंध।
मोहनीय का नाश होय तो, प्राणी होता पूर्ण अबन्ध॥
फल पाऊँ तत्त्वार्थ सूत्र को, पढ़ने का मैं हे भगवन्!
सदाचार के द्वारा मेरा, छूट जाए भव का बंधन॥
'विशद' ज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, अष्ट कर्म का होय विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास॥

(छंद-घत्तानंद)

पढ़के जिनवाणी, हो श्रद्धानी, बन जाएँ सम्यक् ज्ञानी।
हो आतम ध्यानी, केवलज्ञानी, तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ के प्राणी॥

ॐ ह्रीं सर्व तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर विधान तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में जागे हर्ष अपार।
शुभ भावों का फल पाता वह, सर्व जगत् में मंगलकार॥
कर देता अज्ञान दूर वह, बन जाता सम्यक्ज्ञानी।
मोक्षमार्ग का राही बनता, सत्य यही आगम वाणी॥
इस विधान की पूजा का फल, हमें प्राप्त हो हे भगवन्।
रत्नत्रय निधि शुभम् प्राप्त हो, 'विशद' भाव से मम् वंदन॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

आरती तत्त्वार्थ सूत्र की

(तर्ज–आज करें हम...)

आज करे तत्त्वार्थ सूत्र की, आरति सब नर-नार
घृत के दीपक लेकर आए-2, जिनवर के दरबार।
ओ जिनवर! हम सब उतारे मंगल आरती॥

तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकार मय प्यारी।
गणधर द्वारा गुँथित की है, जग में मंगलकारी॥
ओ जिनवर.....॥

आचार्यों ने क्रमशः जिसका, मौखिक वर्णन कीन्हा।
पुष्पदंत अरु भूतबलि ने, लिपिबद्ध कर दीन्हा॥
ओ जिनवर.....॥

उमास्वामी आचार्य ने अनुपम, रचना कीन्ही भाई।
शुभ तत्त्वार्थ सूत्र यह मनहर, कृति सामने आई॥
ओ जिनवर.....॥

सप्त तत्त्व छह द्रव्यों का, शुभ वर्णन जिसमें कीन्हा।
दश अध्याय के द्वारा अतिशय, मोक्षमार्ग शुभ दीन्हा॥
ओ जिनवर.....॥

वह उपवास के फल को पाते, भाव सहित जो ध्यावें।
'विशद' भाव से पाठ करें अरु, आरती मंगल गावें॥
ओ जिनवर.....॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, रानीला मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2540 वि.सं. 2070 चैत्र मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी दिन सोमवासरे तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
जिला छतरपुर कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.

दोहा- **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित 175 विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

1. श्री आदिनाथ मण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ मण्डल विधान
3. श्री सम्भवनाथ मण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ मण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान
6. श्री पद्‌मप्रभु मण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु विधान
9. श्री पुष्पदन्त विधान
10. श्री शीतलनाथ विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ विधान
12. श्री वासुपूज्य विधान
13. श्री विमलनाथ विधान
14. श्री अनन्तनाथ विधान
15. श्री धर्मनाथ विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री कुंथुनाथ विधान
18. श्री अरहनाथ विधान
19. श्री मल्लिनाथ विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
21. श्री नमिनाथ विधान
22. श्री नेमिनाथ विधान
23. श्री पार्श्वनाथ विधान
24. श्री महावीर विधान
25. पंच परमेष्ठी विधान
26. णमोकार मण्डल विधान
27. भक्तामर मण्डल विधान
28. सम्मेद शिखर विधान
29. श्रुत स्कंध विधान
30. याग मण्डल विधान
31. पंचकल्याणक विधान
32. त्रिकाल चौबीसी विधान
33. कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. पंचमेरु विधान
37. लघु नन्दीश्वर विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. ऋषिमण्डल विधान
42. विषापहार स्त्रोत विधान
43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान
44. वास्तु मण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक
 श्री पदमप्रभु विधान
47. चौंसठ ऋद्धि विधान
48. कर्मदहन मण्डल विधान
49. लघु नवदेवतर विधान
50. सहस्त्रनाम विधान
51. चारित्र लब्धी विधान
52. अनन्त व्रतमण्डल विधान
53. कालसर्प योग निवारक विधान
54. शनि अरष्टि निवारक विधान
55. आचार्य परमेष्ठी विधान
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान
57. सरस्वती विधान
58. विशद महाअर्चना विधान
59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)
60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
61. अर्हतनाम विधान
62. सम्यक् आराधना विधान
63. मृत्युंजय विधान
64. शांति प्रदायक शांति विधान
65. लघु मृत्युंजय विधान
66. जम्बूद्वीप विधान
67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान
68. क्षायिक नव लब्धी विधान
69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
70. गोम्मटेश बाहुबली विधान
71. निर्वाण क्षेत्र विधान
72. तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
73. त्रैलोक्य मण्डल विधान
74. पुण्यास्त्रव विधान
75. सप्तऋषि विधान
76. श्री शांति कुंथु अरहनाथ विधान
77. श्रावक व्रत दोष
78. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
79. सम्यक् दर्शन विधान
80. श्रुत ज्ञान व्रत विधान
81. चारित्र शुद्धिव्रत विधान (जाप्य)
82. मनोकामना पूर्णशांति विधान
83. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
84. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
85. विजयश्री विधान
86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
88. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
89. षट् खण्डागम विधान
90. दिव्य देशना विधान
91. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
92. नवग्रह शांति विधान
93. रक्षाबन्धन विधान
94. तीर्थंकर विधान
95. गणधरवलय विधान (लघु)
96. गिरनार गिरि विधान
97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय)
99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर
100. वास्तु विधान (द्वितीय)
101. भक्तामर विधान (चोपाई)
102. पद्‌मावती विधान
103. 96 क्षेत्रफल विधान
104. बड़े बाबा विधान
105. कल्पद्रुम विधान (लघु)
106. केवल्यलक्ष्मी प्राप्ति विधान
107. महावीर समवशरण विधान
108. चान्दनपुर महावीर विधान
109. श्री शांति विधान (शांतिनाथ खोह)
110. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
111. सुगन्ध दशमी विधान
112. कर्म निर्झरव्रत विधान
113. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान
114. रविव्रत पूजा विधान
115. सौभाग्यदशमी व्रत विधान
116. पुरन्दर विधान
117. रोहिणी व्रत विधान
118. अनन्त वीर्य केवली विधान
119. मौन एकादशी व्रत विधान
120. सुख सम्पति व्रत विधान
121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान
122. श्री पार्श्वनाथ विधान (निमोला)
123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा)
124. यागमण्डल विधान (लघु)
125. चारित्र शुद्धि विधान (वृहद)
126. अष्टान्हिका विधान (वृहद)
127. चौबीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
128. नवदेवता विधान (वृहद)
129. ऋषि मण्डल विधान (वृहद)
130. नवगृहशांति विधान (वृहद)
131. पंच बालयति विधान (वृहद)
132. तत्वार्थ सूत्र विधान (वृहद)
133. सहस्त्र नाम विधान (वृहद)
134. नन्दीश्वर विधान (वृहद)
135. महामृत्युंजय विधान (वृहद)
136. दशलक्षण विधान (वृहद)
137. रत्नत्रय विधान (वृहद)
138. सिद्धचक्र विधान (वृहद)
139. अभिनवकल्पतरू विधान (वृहद)
140. समवशरण विधान (वृहद)
141. इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
142. धर्मचक्र विधान (वृहद)
143. अर्हत् महिमा विधान (वृहद)
144. विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
145. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान (वृहद)
146. तीन लोक विधान (वृहद)
147. सोलहकारण भावना विधान (वृहद)
148. गणधर वलय विधान (वृहद)
149. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान (वृहद)
150. चौबीस तीर्थंकर विधान (द्वितीय) (वृहद)
151. कल्पद्रुम विधान
152. चौसठ ऋद्धि विधान (लघु)
153. (कांजीबारस) श्रावण द्वादशी विधान
154. चूलगिरि विधान
155. पंचपरमेष्ठी विधान
156. तीस चौबीस विधान
157. आकाश पंचमी विधान
158. पुष्पांजलि विधान
159. नवनिधि विधान
160. साप्ताहिक सप्त विधान
161. पल्य विधान
162. शांतिभक्ति विधान
163. आ. श्रीविराग सागर विधान
164. चैत्य भक्ति विधान
165. श्री ऋषभदेव विधान
166. रत्नत्रय विधान
167. रक्षाबन्धन विधान
168. ऋद्धि सिद्धि विधान
169. भरत केवली विधान
170. सर्वतोभद्र विधान
171. शांतिविधान (सर्वोदयतीर्थ)
172. आदिनाथ विधान (अष्टापद)
173. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़)
174. सैंतालिश भक्ति विधान
175. शांति विधान (तिजारा)
176. पंचकल्याणक विधान (लघु)
177. यागमण्डल विधान (लघु)
178. योगसार विधान
179. गणधर वलय विधान (लघु)
180. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
181. जम्बू स्वामी विधान

संकलन प्रयास : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज

कृति : **विशद तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान (लघु)**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी, ऐलक श्री विदक्षसागर जी
क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, क्षु. श्री वात्सल्य भारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660998425

संयोजन : ब्र. सपना दीदी 9829127533, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : द्वितिय 2018 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 25/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : **1. विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

2. हरीश जैन
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली,
नियर लाल बत्ती चौक
गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971

3. सुरेश सेठी
पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,
दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017

-: अर्थ सौजन्य :-

श्रीमति सुषमा चंदेरिया
कुमारी रूपाली जैन अरिहंत चंदेरिया
माता श्री कमलाबाई चंदेरिया
भाई श्री राजकुमार जैन (लल्लू
जयंत कुमार चंदेरिया
जे. के. ट्रेडर्स पाटन जिला जबलपुर (म.प्र)

चौधरी सुखमाल कुमार जी जैन
आदिनाथ ट्रेडिंग कम्पनी
पाटन, जबलपुर (म.प्र.)
श्रीमती संध्या जैन
सजल, साक्षी, श्रृष्टी जैन

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com